संस्कृत वाङ्मय में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम

संस्कृत वाङ्मय में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम

प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम उद्देश्य

दुःखपङ्कनिमग्न प्राणियों के उद्धार की कामना से महर्षियों ने शास्त्रों का निर्माण किया, शास्त्रपरम्परा में दर्शनों का विशिष्ट स्थान सर्वविदित है। वास्तव में दर्शन नूतन तत्त्वों का अन्वेषण ही है। नूतन तत्त्वों के अन्वेषण की परम्परा में न्यायपरम्परा का अतुलनीय योगदान है। न्यायशास्त्र की प्रशंसा करते हुए कहा भी गया है – "न्यायादि पाणिनीयञ्च सर्वशास्त्रोपकारकम्"। कौटिल्य ने भी न्यायशास्त्र की प्रशंसा करते हुए कहा है–

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणां।
आश्रयः सर्वधर्माणां सेयमान्वीक्षिकी मता ।।

प्रदीप की तरह प्रकृष्ट इस न्यायविद्या के संरक्षण से ही सभी विद्याओं का संरक्षण संभव है।समाज के उद्धार की दृष्टि से सभी विद्याओं को जनमानस तक पहुँचाने के पावन उद्देश्य से श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के न्यायवैशेषिक विभाग ने **संस्कृत वाङ्मय में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम** (डिप्लोमा कोर्स) के योजनाबद्ध संचालन का दृढ़संकल्प लिया है। जिसका मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है –

a. IAS हेतु पारम्परिक छात्रों को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करना।
b. आधुनिक धारा में प्रशिक्षित छात्रों को भी अपनी परम्परा के साथ जोडना।
c. PCS तथा NET(JRF) के लिए छात्रों को प्रशिक्षण देना।
d. शास्त्रों के प्रति उत्सुक सभी लोगों को अपने शास्त्रों का ज्ञान प्रामाणिक रूप से सुलभ कराना ।
e. विद्यापीठ के समस्त सम्बद्धविभागों, विभागीय एवं विभागेतर छात्रों तथा अध्यापकों के साथ विषयाधारित अन्तःसम्बन्ध स्थापित करना।
f. पाठ्यक्रम के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को शास्त्राध्ययन हेतु प्रोत्साहित करना।
g. संस्कृत के बिना (+2) पास हुए छात्रों को भी अपनी परम्परा में प्रशिक्षित कर शास्त्री कक्षा में प्रवेश के योग्य बनाना।

इन उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए न्यायवैशेषिक विभाग **"संस्कृत वाङ्मय में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम"** (डिप्लोमा कोर्स) प्रारम्भ करने का प्रस्ताव करता है। यह पाठ्यक्रम स्ववित्तपोषित होगा, तथा सायं काल में कक्षायें चलेंगी।

विभागाध्यक्ष
18-9-18

147

28

पूर्णांकः 80 मौखिकांकः – 20

60

प्रथमपत्रम्

1) न्यायवैशेषिकौ

1. पदार्थः 2. द्रव्यम् 3. ईश्वरः 4. परमाणुकारणतावादः 5. कारणम् 6. द्रव्यनाशप्रक्रिया 7. सृष्टिक्रमः 8. प्रमाणम् 9. हेत्वाभासः 10. शाब्दबोधप्रक्रिया 11. शब्दशक्तिः 12. प्रामाण्यवादः 13. पाकजप्रक्रिया 14. मोक्षः।

2) नव्यन्यायपारिभाषिकशब्दानां परिचयः, नव्यन्याये सम्बन्धविचारः, लौकिकन्यायाः।

आधारग्रन्थाः

I. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, श्रीकृष्णवल्लभाचार्यकृता किरणावली टीका, चौ. सं. संस्थानम् -1990

II. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, दिनकरीसहिता , राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् – नईदिल्ली – 2003

III. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, eng.tr.by swami madhavananda, advait ashram.

IV. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, हिन्दीटीका पं. गजाननशास्त्री मुसलगांवकरस्य, चौ. सं. संस्थानम् 1999

V. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, अनुमान खण्ड, दिनकरी हिन्दी व्याख्या डॉ. महानन्द झा, चौ.सं. प्रकाशनम् वाराणसी 2008

VI. तर्कभाषा, हिन्दीअनुवादः, पं. बदरीनाथशुक्लः, मोतीलालबनारसीदासः, नई दिल्ली 1976

VII. तर्कभाषा, अंग्रेजी अनुवादः डॉ. एस.आर. अय्यरः, चौ. ओरियन्टालिया, वाराणसी 1979।

VIII. तर्कसंग्रहः न्यायबोधिनीपद-कृत्य-दीपिका-किरणावलीव्याख्योपेतः, व्यासप्रकाशनम्-वाराणसी, 1988

IX. तर्कसंग्रहः, दयानन्दभार्गवः – हिन्दी व्याख्या, मोतीलालबनारसीदासः, दिल्ली- 1971

X. तर्कसंग्रहः, Athalye and bodas, bori, pune, 1963

XI. तर्कामृतम्, चषकसहितम्, प्रो. पीयूषकान्तदीक्षितः, नागप्रकाशनम् नई दिल्ली-2003

XII. तर्कामृतम्, विवृतिसहितम्, डॉ. विष्णुपदमहापात्रः, मान्यताप्रकाशनम् नईदिल्ली 2009

XIII. नव्यन्याय के पारिभाषिक पदार्थ डॉ. बलिराम शुक्लः परामर्शप्रकाशनम् पुणे 1999

XIV. न्यायपारिभाषिकशब्दावली, डॉ. विष्णुपदमहापात्रः, मान्यताप्रकाशनम् नईदिल्ली 2010

XV. न्यायायनम्, डॉ. कमलेशमिश्रः, श्री ज. सं. वि.वि पुरी 2005

XVI. सम्बन्धभाषणम्, डॉ. कमलेशमिश्रः, श्री ज. सं. वि.वि पुरी 2003

……………………………………

विकास महापात्र

148

XVII. अष्टोत्तरशतन्यायमाला, स्वामी विद्यानन्दगिरिः, श्री कैलाशविद्याप्रकाशनम् ऋषीकेशः 1993

XVIII. न्यायशतकम्, के. वरदराजः, आचार्यवन्दनसमितिः, मैसूर 1991

सहायकग्रन्थाः

I. अनुमानप्रमाण, प्रो. बलिरामशुक्ल, देहली – 1986

II. व्याप्तिसप्तकसारः प्रो. पीयूषकान्तदीक्षितः, नागप्रकाशन नई दिल्ली 1997

III. पञ्चलक्षणी, प्रो. पीयूषकान्तदीक्षितेन सम्पादिता, श्री. ला.ब.शा.रा.सं.वि. नईदिल्ली 2010

IV. शब्दशक्तिप्रकाशिकासमीक्षणम्, डॉ. विष्णुपदमहापात्रः, मान्यताप्रकाशनम् नईदिल्ली 2006

V. प्रशस्तपादभाष्यम्, श्रीधरभट्टकृता न्यायकन्दलीटीका, सं.सं. वि.वि. वाराणसी 1977

VI. न्यायकुसुमाञ्जलिः,पं. हरिदासभट्टाचार्यकृता हरिदासीटीका, भारतीयविद्याप्रकाशनम् वाराणसी 1997

VII. The Nyaya theory of knowledge by S. C. Chattarjee, Kolkata 1939

VIII. Supernormal perception in Indian philosophy by N. K. Dash Cass University pune 2000

IX. Inference and fallacies Discussed in Ancient Indian logic by P. P. Gokhale, Delhi- 1992

X. The Justification of Inference. A Navya Nyaya Approach by R. N. Ghosh. Delhi 1990

XI. Navya Nyaya system of logic by D.C. Guha, Moti Lal Banarsidass, Varanasi 1979

XII. The Indian philosophy of word and meaning by Pt. G.N. shastri, Sanskrit collage, Calcutta 1959

XIII. Primer of Indian logic – kuppu swami shastri – Madras.

XIV. भारतीय न्यायशास्त्र, चक्रधरविज्ञल्वान उ.प्र. हि.संस्थान लखनऊ -1989

द्वितीयपत्रम् पूर्णांकः 80 मौखिकाङ्कः 20

सांख्ययोगौ 20

a. सांख्यम् - प्रकृतिः, पुरुषः, सत्कार्यवादः, मोक्षः, सृष्टिक्रमः, प्रत्ययसर्गः ।

b. योगः - चित्तम्, चित्तवृत्तिः, क्लेशः, समाधिः, ईश्वरः, कैवल्यम्, वैराग्यम्।

मीमांसा 15

1 धर्माधर्मौ 2. भावना 3. विधिः 4. श्रुत्यादीनां प्राबल्यविचारः 5. ज्ञानम् 6. प्रमाणम्।

वेदान्त 20

अनुबन्धचतुष्टयम् अज्ञानम्, अध्यारोपापवादौ, लिङ्गशरीरोत्पत्तिः, पञ्चीकरणम्, विवर्तः, ब्रह्म, ईश्वरः, आत्मा, जीवः, जगत्, माया, अविद्या, अध्यासः, मोक्षः, अपृथक्सिद्धिः, पञ्चविधकोशः, महावाक्यचतुष्टयम्

अरविन्ददर्शनस्य वैशिष्ट्यम् 10

श्रीमद्भगवद्गीतायाः वैशिष्ट्यम् (द्वितीयोऽध्यायः 13-25श्लोकाः) 10

ईशावास्योपनिषदः (1-7, 15-18 मन्त्राः) 05

आधारग्रन्थाः

I. सांख्यकारिका, सम्पा./अनु. आचार्यजगन्नाथशास्त्री, मोतीलालबनारसीदासः, वाराणसी -1966

II. सांख्यकारिका, Tr. Wilson, Delhi – 1978

III. सांख्यतत्त्वकौमुदी, व्याख्याकारः पं. ज्वालाप्रसादगौडः, चौ.सु.भा. प्रकाशनम् 1992

IV. पातञ्जलयोगसूत्रम्, व्यासभाष्यसहितम्, रा. सं. संस्थानम् नई दिल्ली

V. वेदान्तसारः, पं. बदरीनाथशुक्ल, हिन्दी व्याख्या, मोतीलालबनारसीदास वाराणसी 1979

VI. Vedantsara, eng. Tr. Swami Nikhilanand, Calcutta 1974

VII. पञ्चदशी, श्री ला.ब.शा. रा. सं. विद्यापीठम्, नई दिल्ली

VIII. अर्थसंग्रहः अर्थालोकटीका, प्रो. वाचस्पतिउपाध्यायः, चौ. ओरियन्टालिया, 1977

IX. अर्थसंग्रहः, तिरुपतिविद्यापीठम्, तिरुपतिः- 2005
X. मीमांसापरिभाषा, चौ. संस्कृतसंस्थानम् – 1908
XI. मीमांसापरिभाषा, रामकृष्णमिशनम् (eng. Tr.)
XII. अरविन्ददर्शनम्, अरविन्दाश्रम नई दिल्ली
XIII. श्रीमद्भगवद्गीता, शांकरभाष्यसहिता, गीताप्रेसः, गोरखपुरम् – 1996
XIV. ईशावास्योपनिषद्, शांकरभाष्यसहिता, गीताप्रेसः, गोरखपुरम् – 1996

सहायकग्रन्थाः –

I. भारतीयदर्शन, आचार्यबलदेव उपाध्याय, शारदामन्दिरप्रकाशन, वाराणसी 1991
II. सांख्यदर्शन की ऐतिहासिक परम्परा, डॉ. आद्याप्रसादमिश्र सत्यप्रकाशन
III. भारतीय दर्शन, प्रो. पारसनाथद्विवेदी, आगरा 1999
IV. तत्त्ववैशारदी, बालप्रिया हिन्दी व्याख्या, डॉ. विमला कर्णाटका, का.हि.वि.वि. वाराणसी
V. वेदान्तदर्शनस्येतिहासः, आचार्य उदयवीरशास्त्री, देहली 1997
VI. दर्शनशास्त्रस्येतिहासः डॉ शशिबालागौडः, चौ.सु. प्रकाशन 1974
VII. Indian philosophy by Dr Radhakrishnan, London, Newyork 1965
VIII. History of Indian philosophy by S. N. Dasgupta Delhi
IX. History of Purva mimamsa by Prof. A. B. Keeth
X. Purvamimamsa in its sources by G. N. Jha, Moti Lal Banarsidass Varanasi – 1978

तृतीयपत्रम् पूर्णांकः 80 मौखिकाङ्कः 20

अवैदिकदर्शनं पाश्चात्यदर्शनञ्च

प्रथमो भागः अवैदिकदर्शनम् 30

1. चार्वाकदर्शनम् 10

ज्ञानसिद्धान्तः, तत्त्वमीमांसा, प्रमाणम्, आत्मा, मोक्षः।

2. बौद्धदर्शनम् 10

तत्त्वम्, प्रतीत्यसमुत्पादः, प्रमाणम्, क्षणिकवादः, नैरात्म्यवादः, शून्यवादः।

3. जैनदर्शनम् 10

जैनदर्शने तत्त्वानि, सप्तभंगीनयः, अनेकान्तवादः(स्याद्वादः), बन्धः, मोक्षः, प्रमाणम्।

द्वितीयोभागः पाश्चात्यदर्शनम्

50

I. प्लेटोमहोदयस्य अरिस्टटलमहोदयस्य च, बुद्धिवादः, द्रव्यम्, कारणतावादः,

II. देकार्त – स्पिनोजा – लाइबनित्जमते तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, षदार्थः, ईश्वरः, मनः, शरीरादिकम्, सिद्धान्तश्च।

III. लाक् - वर्कले – ह्यूममहोदयानां ज्ञानमीमांसा द्रव्यम्, गुणः, आत्मा, ईश्वरः, सिद्धान्तश्च।

IV. काण्टसिद्धान्तः हेगलसिद्धान्तश्च

V. मोरे, रसेल, उइन्गिस्टाइनमते बुद्धिवादः, अणु वादः, सिद्धान्तश्च

VI. पाश्चात्यदर्शने अन्ये दार्शनिकाः,तेषां सिद्धान्तश्च

आधारग्रन्थाः

I. सर्वदर्शनसंग्रहः, उमाशंकरशर्मा ऋषिः, चौ. सं. संस्थानम् वाराणसी 1988

II. षड्दर्शनसमुच्चयः, हरिभद्रसूरिः, ऐशियाटिकसोसायटि, कोलकाता 1986

III. न्यायदीपिका, धर्मभूषणयतिः, वीरसेवामंदिरम्, देहली

IV. तत्त्वार्थसूत्रम्, पं. फूलचन्दशास्त्री, गणेशवर्णी शोधसंस्थानम्, नरिया, वाराणसी 1991

V. बौद्धधर्मदर्शन, आचार्यनरेन्द्रदेवः, बिहार राष्ट्रभाषापरिषद्, पाटिलपुत्रम् 1971

VI. पाश्चात्यदर्शन, चन्द्रधरशर्मा, मोतीलालबनारसीदासः नवदेहली 1997
VII. पाश्चात्यदर्शन, डॉ. ब्रह्मस्वरूप अग्रवाल उत्तरप्रदेश हिन्दीसंस्थान लखनऊ 1991
VIII. पाश्चात्यदर्शनम्, डॉ. एस पण्डा, भोगराई सं, महाविद्यालय वालासोर 2010

सहायकग्रन्थाः

i. जैनदर्शन एक विश्लेषण , मुनि देवेन्द्र, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, देहली 1997
ii. बौद्धसिद्धान्तबिन्दुः, डॉ. सत्करीमुखर्जी, कोलकाता 1988
iii. योगाचार आईडियालिज्म ए.के चटर्जी
iv. माथुरीषञ्चलक्षणी (भूमिका भागः) पं. बदरीनाथशुक्लः, रा, हि. अकादमी, जयपुर 1975
v. विज्ञप्तिमात्रता सिद्धिः, सारनाथ
vi. चार्वाकदर्शन, आचार्य आनन्द झा, हिन्दी समिति सूचनाविभागः, उ.प्र. लखनऊ – 1969
vii. बौद्धदर्शनमीमांसा, आचार्य वलदेव उपाध्याय, चौ. प्रकाशन , वाराणसी
viii. भारतीयदर्शन, आचार्यबलदेव उपाध्याय शारदामन्दिरप्रकाशन, वाराणसी 1991
ix. A History of Indian philosophy by J.N. sinha, Calcutta 1952
x. Lokayata (A study in Ancient Indian materialism) by D.P. Chatarjee, ICPR New Delhi 1968
xi. Outline of Jainism by F.W. Thomar, J. L. Janine trust. Indore 1971
xii. Jain philosophy historical outline by N.B. Bhattacharya, M. Manohar Lal Delhi 1976
xiii. The development of logic by kneale, Oxford University 1971
xiv. A History of Indian logic by M.M. Sc Vidyabhusana Motilalbanarsidas 1988
xv. Nyaya philosophy of language by S. J. John Vattanky Delhi 1995
xvi. History of Indian philosophy by S.N. Das Gupta Delhi
xvii. Jain philosophy an introduction by M. L. Mehta, Bhartiya Vidya Bhavan Bangalore 1998
xviii. जैनदर्शन, प्रो. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य, गणेशवर्णीशोधसंस्थान, वाराणसी 1974
xix. समकालीन पाश्चात्यदर्शन, – लक्ष्मीसक्सेना, उ.प्र. हिन्दीसंस्थान लखनऊ -2000
xx. पाश्चात्यदर्शन का इतिहास, प्रो. दयाकृष्ण, रा.हि.ग्रन्थ. अकादमी जयपुर – 1984
xxi. पाश्चात्यदर्शन का आधुनिक युग, डॉ. ब्रजगोपालतिवारी आगरा

चतुर्थपत्रम्

पूर्णांकः 80 मौखिकाङ्कः 20

काव्यशास्त्रम्

a. काव्यम्

I. रघुवंशम् 1/1-10 30
II. कुमारसम्भवम् 1/1-10
III. किरातार्जुनीयम् 1/1-10
IV. शिशुपालवधम् 1/1-10
V. नैषधीयचरितम् 1/1-10
VI. मेघदूतम् 1/1-10
VII. कादम्बरी – शुकनासोपदेशः
VIII. दशकुमारचरितस्य सामान्यपरिचयः
IX. शिवराजोदयस्य (S.B. वर्नेकरः) सामान्यपरिचयः

b. नाटकम्

i. स्वप्नवासवदत्तम् vi अंकः 30
ii. अभिज्ञानशाकुन्तलम्. ivअंकः
iii. मृच्छकटिकस्य सामान्यपरिचयः
iv. मुद्राराक्षसस्य सामान्यपरिचयः,
v. उत्तररामचरितम् I अंकः
vi. रत्नावल्याः सामान्यपरिचयः
vii. वेणीसंहारस्य सामान्यपरिचयः

c. नीतिशतकम्

i. नीतिशतकम् 1-10 श्लोकाः 20
ii. पञ्चतन्त्रस्य सामान्यपरिचयः
iii. राजतरंगिण्याः सामान्यपरिचयः
iv. हर्षचरितस्य सामान्यपरिचयः
v. अमरूकशतकस्य सामान्यपरिचयः
vi. गीतगोविन्दस्य सामान्यपरिचयः
vii. सुन्दरकाण्डम् (वाल्मीकिरामायणम्) 15 सर्गः 15-30 श्लोकाः
viii. महाभारतस्य सामान्यपरिचयः

32

आधारग्रन्थाः

i. रघुवंशम्, कालिदासः - मल्लिनाथकृतसंजीवनीसहितः रा. सं संस्थानम् नई दिल्ली।
ii. कुमारसम्भवम्, कालिदासः मल्लिनाथकृतसंजीवनीसहितः रा. सं संस्थानम् नई दिल्ली।
iii. किरातार्जुनीयम् भारविः, चौ. सं. संस्थानम् वाराणसी।
iv. शिशुपालवधम्, माघः, चौ. सं. संस्थानम् वाराणसी।
v. नैषधीयचरितम् श्रीहर्षः, चौ. सं. संस्थानम् वाराणसी।
vi. मेघदूतम्, कालिदासः, मोतीलालबनारसीदासः
vii. कादम्बरी – शुकनासोपदेशः, चौ. विद्याप्रकाशनम्, वाराणसी।
viii. दशकुमारचरितम् , चौ. सु. प्रकाशनम्, वाराणसी।
ix. स्वप्नवासवदत्तम् , चौ. सं. संस्थानम्, वाराणसी।
x. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, M. R. Kale Edition म.प्र.हिन्दी अकादमी भोपालम्।
xi. मृच्छकटिकम् , चौ. विद्याप्रकाशनम्, वाराणसी, Motilalbanarsidass Varanasi.
xii. मुद्राराक्षसम्, M. R. Kale Edition Delhi 1991, Motilalbanarsidass, Varanasi.
xiii. उत्तररामचरितम्, M. R. Kale Edition Delhi 1991, Motilal banarsidass Varanasi.
xiv. रत्नावली, - हर्षवर्धनः, चौ. ओरियन्टालिया , नई दिल्ली।
xv. वेणीसंहारः, चौ. सं. संस्थानम् वाराणसी/ साहित्य भण्डार मेरठ।
xvi. नीतिशतकम्, Edited by D.D. Kosami, Bharatiya vidya bhavan publication
xvii. पञ्चतन्त्रम्, विष्णुशर्मा चौ. सं. संस्थानम् वाराणसी।
xviii. राजतरंगिणी, कल्हणः चौ. सं. संस्थानम् वाराणसी।
xix. हर्षचरितम्, चौखम्भा वाराणसी / मोतीलालबनारसीदासः।
xx. अमरूकशतकम्, अमरूकः,
xxi. गीतगोविन्दम्, जयदेवः , रा. सं. विद्यापीठ, तिरुपतिः।
xxii. सुन्दरकाण्डम्, वाल्मीकिः , गीताप्रेस गोरखपुरम्।
xxiii. महाभारतम्, व्यासः, गीताप्रेसः गोरखपुरम्।

सहायकग्रन्थाः

i. भारतीयकाव्यशास्त्र की भूमिका, नगेन्द्र, दिल्ली -1963
ii. Indian Literary Theories' by K. Krishnamurthy, Delhi 1985
iii. Indian kavya Literature by A.K. warder, Delhi 1989

चिकल्पमहापात्र

155

iv. A New History of Sanskrit literature by Krishna chaitanya 1977
v. Sanskrit Theory of Drama and Dramaturgy by T.C. Mainkar Delhi 1978
vi. संस्कृत साहित्य का विशद इतिहास, पुष्पा गुप्ता ईस्टर्न बुक्सलिंकर्स दिल्ली- 1994
vii. Sanskrit Poetries in Cultural Heritage of India, by G.N. Shastri -1978
viii. संस्कृत साहित्य इतिहास, वाचस्पति गोरेला, चौ प्रकाशनम्, वाराणसी
ix. संस्कृत साहित्य इतिहास, उ.प्र, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ।
x. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आ.बलदेवउपाध्यायः, चौ. सं. संस्थानम् वाराणसी।

विकास महाजन

11

पूर्णांकः 80 मौखिकाङ्कः 20

पञ्चमपत्रम्

व्याकरणम्, भाषानैपुण्यम्, वेदाः, धर्मशास्त्रम्, अर्थशास्त्रञ्च 25

1. व्याकरणम्

संज्ञा, सन्धिः, कारकम्, समासः, तद्धितः, कृदन्तः, स्त्रीप्रत्ययः, वाच्यपरिवर्तनम्। 10

2. भाषानैपुण्यम्

अनुवादः, निबन्धः, वाग्व्यवहारः, रूपविज्ञानम्, ध्वनिविज्ञानम्। 10

3. वेदस्य सामान्यपरिचयः 05

4. धर्मशास्त्रम्

संस्कारः, आश्रमव्यवस्था 05

5. अर्थशास्त्रस्य परिचयः 25

6. Social And Political Philosophy

7. Social and Political Ideas, Equality, Justice, Liberty.

8. Sovereignty – Austin, Boding, Laski, Kautilya.

9. Individual and State, Rights, Duties and Accountability.

10. Forms of Government, Monarchy, Theocracy and Democracy.

11. Political Ideologies, Anarchism, Marxism and socialism.

12. Humanism, Secularism, Multiculturalism.

13. Crime and Punishment, Corruption, mass violence, Genocide, Capital punishment.

14. Development and social progress.

15. Cast Discrimination, Gandhi and Ambedkar.

16. Gender Discrimination, Female poeticise, Land and property Rights, Empowerment.

17. Religious Experience, Nature and Object (Indian and western).
18. Religion without God.
19. Religious pluralism and the problem of Absolute truth.
20. Religion and morality.
21. Nature of Religious Language, Analogical and symbolic, cognitive and Non cognitive.

आधारग्रन्थाः

i. लघुसिद्धान्तकौमुदी इन्दुमती सहिता, चौ. सं. संस्थानम् वाराणसी।
ii. सिद्धान्तकौमुदी, चौ. सं. संस्थानम्, वाराणसी।
iii. वृहदनुवादकौमुदी, कपिलदेवद्विवेदी।
iv. संस्कृतव्याकरणम् श्रीधरवशिष्ठः।
v. संस्कृतनिबंधरत्नाकर; डॉ. शिवप्रसादभारद्वाजः, अशोकप्रकाशनम् दिल्ली – 1977
vi. वैदिकवाङ्मय का इतिहास, पं. भगवद्दत्त।
vii. वैदिकसाहित्य का इतिहास, आ. बलदेव उपाध्याय, चौ. प्रकाशन, वाराणसी।
viii. मनुस्मृतिः, मनुः रा. सं संस्थानम् नई दिल्ली / चौ. प्रकाशनम्, वाराणसी।
ix. याज्ञवल्क्यस्मृतिः, याज्ञवल्क्यः रा. सं संस्थानम् नई दिल्ली / चौ प्रकाशनम्, वाराणसी।
x. अर्थशास्त्रम्, कौटिल्यः, रा. सं संस्थानम्, नई दिल्ली।

सहायकग्रन्थाः

i. बृहद् अनुवादचन्द्रिका – चक्रधरहंसनौटियालः, मोतीलालबनारसीदासः।
ii. संस्कृतस्य व्यावहारिकस्वरूपम्, डॉ. नरेन्द्रः, अरविन्दाश्रमः, पाण्डिचेरी।
iii. संस्कृत में अनुवाद कैसे करें, उमाकान्तमिश्र, भारती भवन, पटना 1971
iv. A higher Sanskrit grammar - M.R. kale Motilalbanarsidass, Delhi.
v. संस्कृतव्याकरणशास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिरमीमांसक, रामलाल कपूर ट्रस्ट 1973
vi. नवनीत संस्कृतशब्द धातु–रूपावलि, राजारामशास्त्री, नवनीतप्रकाशन, मुम्बई।

vii. प्रबंधप्रकाश, डॉ. मालदेव शास्त्री Indian press PVT. LTD प्रयाग।

viii. A Vedic Reader for student by A.A. MacDonnell, Motilalbanarsidass, Delhi.

ix. The New Vedic selection – B.B. chaubey, Bharatiya vidya bhavan Delhi – 1983.

x. धर्मशास्त्र का इतिहास, P.V. Kane, पुणे।

xi. Literary and Historical Studies in Ideology, V.V. Mirashi, Motilal Banarasi Das, 1st Edition- 1975.

xii. Ecology of Multilingualism (Language, Culture and Society) Hans R Dua, Yasoda Publications, Mysore. 1st Published 2008.

xiii. The Folk- Element in Hindu Culture, by- Benoy Kumar Sarkar, M.A., Oriental Books Reprint Corporation, N.Delhi- 1st Edition- 1972.

xiv. Crime and Punishment, By- Constance Garnet, Everymen's Library, New York.

xv. Ghandhi interpretations, K.P.Karaunakaran, gitanjali publishing house, New Delhi- 1985

xvi. Fundamental human rights (The right life and personal liberty) by- Sunil Deshta, Kiran Deshta, Deep and Deep Publications PVT. LTD., N.Delhi, 1st published-2007

xvii. Woman and Human Rights, Savita Bhatt, Altar Publishing House, Delhi-94, 2010

xviii. War Crimes and Genocide (the trial of Pakistan war criminals) by- B.N. Mehrish- Oriental Publishers, Delhi-6, 1972

xix. Modern Government And Politics, Editor- Prakash Bajpai, (Set of 6 vols), Anmal Publication Privet ltd,N.Delhi-2, First Edition-1994

xx. Wisdom in Indian Traditional, Prof- K.P.Jog, felicitation volume, Editors- Shogun hino, Lalit Deodhar, Pratibha Prakashan, Delhi, 1st Edition-1999

xxi. Cultural Reorientation in Modern India, Edited by- Indu Banga, Jaidev, Indian Institute of advanced study, Rashtrapati Nivas, Shimla, 1996.

xxii. Man in Indian Tradition, Vidyapati's Discourse on purusa, Hetukar jha, Aryan Books international, Delhi-2002

159

xxiii. Facets of Indian Heritage, Dipti Sharma Tripathi, New Bharatiya Book Corporation, Delhi- 7, 1st Edition-2008.

xxiv. The Schedule Caste Voter- P.K. Saxena- 1990, Radha publication, New Delhi-1980.

xxv. Democracy Diversity Stativity, D.D.Khanna-maumllan indi. Ltd. 2/10 Ansari road, Dariyaganj, New Delhi-2, 1998.

xxvi. Democracy And Rule of law- Dr. L.M. Singhvi- Ocean books (p) ltd. 4/19 Asaf ali road, New Delhi-2

xxvii. Political History of Northern India- Dr. G.E. Chaudhary, Sohanlal Jaindharma pracharak samiti, Amritsar-1954,

xxviii. A History of Indian Political Ideas-U.N- Ghoshal, Oxford university press-1959

xxix. Governments and politics of Southeast Asia- David A. Wilson, Cornell University, Press – New Work-1965

xxx. Parliamentary Practices in India- S.L. Shakder Research Publication in Social Sciences, 2/44, Ansari road, Daryaganj, New Delhi-2

xxxi. आधुनिक सरकारें, डॉ. प्रभुदत्त शर्मा, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, सन्-1990

संस्कृत वाङ्मय में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम

प्रवेश सामान्यनियम

1. इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने वाले छात्र को विद्यापीठ के अनुशासन का पालन करना अनिवार्य होगा।

2. विद्यापीठ परिसर में छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे भारतीय संस्कृति एवं वैदिक परम्पराओं का उल्लंघन नहीं करेंगे।

3. कक्षाओं में 10 मिनट से ज्यादा विलम्ब से आने पर उस दिन की अनुपस्थिति मानी जाएगी।

4. कक्षाओं में 75 प्रतिशत उपस्थिति होने पर ही छात्र परीक्षा में बैठने के अधिकारी होंगे, पर्याप्त एवं उचित कारण होने पर न्यायवैशेषिक विभागाध्यक्ष उपस्थिति में 5 प्रतिशत एवं कुलपति 5 प्रतिशत की छूट दे सकते हैं।

5. उक्त पाठ्यक्रम में अध्यापन का माध्यम संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी होगा।

6.(अ) इस विषय के प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु मान्यताप्राप्त संस्थान/ विश्वविद्यालय/ से न्यूनतम शास्त्री/बी.ए./ समकक्ष कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक होगा, तथा प्रवेश हेतु 50 प्रतिशत अङ्क अपेक्षित होंगे।

6.(ब) जिन छात्रों ने बी.ए. में संस्कृत का विषय के रूप में अध्ययन नहीं किया है, उन्हें विद्यापीठ के डिप्लोमा (संस्कृत) में उत्तीर्ण होना आवश्यक होगा।

7. प्रवेश लेने वाले छात्र/ छात्राओं में विषय की अभिरुचि वांछनीय है।

8. प्रवेश से पूर्व विभागीय प्रवेश समिति द्वारा आयोजित साक्षात्कार को उत्तीर्ण करना आवश्यक होगा।

9. विद्यापीठ के चिकित्सक द्वारा स्वास्थ्य प्रमाणपत्र से डिप्लोमा में प्रार्थी का प्रवेश होगा।

निरस्त महापात्र।

10. उपर्युक्त पाठ्यक्रम हेतु कुल 50 स्थान निश्चित है। भविष्य में छात्रों की रुचि एवं संख्या को दृष्टि में रखते हुए स्थान वृद्धि सम्भव है।

11. प्रवेश एवं साक्षात्कार निर्धारित तिथि तक प्राप्त आवेदन पत्रों के आधार पर ही होगा।

12. प्रवेश समिति में संकायप्रमुख दर्शन, न्यायवैशेषिकविभागाध्यक्ष तथा न्यायवैशेषिकविभाग के सभी अध्यापक सम्मिलित होंगे।

13. इस प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम का नियन्त्रण तथा संचालन न्यायवैशेषिकविभाग द्वारा होगा, जिसके अध्यक्ष न्यायवैशेषिकविभागाध्यक्ष होंगे।

14. यह पाठ्यकम 1वर्ष का होगा।

15. सायं 5 बजे से 7:30 तक कक्षाऐं चलेंगी।

16. प्रविष्ट छात्रों को सत्रान्त में पांच पत्रों में लिखित एवं मौखिक परीक्षा अनिवार्य रूप से देनी होगी।

17. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र की राशि 200/-देय होगी।

18. प्रमाणत्रीय पाठ्यक्रम में अध्ययन हेतु प्रवेश शुल्क १००००/- (दस हजार) सुनिश्चित है। यह धनराशि किसी भी परिस्थिति में प्रत्यावर्तनीय नहीं होगी।

19. छात्रों का प्रवेश कम होने तथा धनसंचय की न्यूनता होने पर विद्यापीठ द्वारा यथा नियम धन उपलब्ध कराया जायेगा। भविष्य में धन संग्रह होने पर यह राशि विद्यापीठ को प्रत्यावर्तनीय होगी।

20. बाह्य विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा कक्षाएँ संचालन करने का प्रावधान रहेगा।

21. न्यायवैशेषिकविभाग के समस्त अध्यापक प्रदत्त दायित्व का सविधि पालन करेंगे।

102